पाठ ०८: रैदास के पद

सरल व्याख्या

1. अब कैसे छूटै राम रट लागी।
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।।

- **कठिन शब्दार्थ:**
  - **रट लागी:** बार-बार नाम दोहराने की आदत या लत लगना।
  - **बास:** सुगंध (खुशबू)।
  - **समानी:** समा जाना या बस जाना।
- **व्याख्या:**

संत रैदास जी कहते हैं कि हे राम! मुझे आपके नाम को जपने की जो रट (लत) लग गई है, वह अब किसी भी प्रकार छूट नहीं सकती। हे प्रभु! आप प्रकृति के सबसे सुगंधित 'चंदन' के समान हैं और मैं साधारण 'पानी' हूँ। जिस प्रकार चंदन को पानी में घिसने से उसकी सुगंध पानी के कण-कण में समा जाती है, उसी प्रकार आपकी भक्ति से मेरे शरीर के अंग-अंग में आपकी ही पवित्र सुगंध समा गई है।

2. प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभु जी तुम दीपक, हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।।

- **कठिन शब्दार्थ:**
  - **घन:** बादल।
  - **बन:** वन या जंगल।
  - **चितवत:** देखना या निहारना।
  - **चंद:** चंद्रमा।
  - **चकोरा:** चकोर पक्षी (जो चंद्रमा को एकटक देखता रहता है)।
  - **बाती:** दीये की रुई की बत्ती।
  - **जोति:** ज्योति या लौ।
  - **बरै:** जलना।
  - **राती:** रात।
- **व्याख्या:**

हे प्रभु! आप उमड़ते हुए काले 'बादल' (घन) हैं और मैं वन का मस्त 'मोर' हूँ, जो बादलों को देखकर खुशी से नाचने लगता है। मेरा मन आपकी ओर हमेशा वैसे ही लगा रहता है, जैसे चकोर पक्षी पूरी रात बिना पलक झपकाए चंद्रमा (चंद) को निहारता रहता है। हे ईश्वर! आप स्वयं 'दीपक' हैं और मैं उसमें जलने वाली 'बाती' हूँ। आपकी भक्ति की यह अलौकिक लौ मेरे अंतर्मन में दिन-रात (राती) जलती रहती है और मेरे जीवन को आलोकित करती है।

3. प्रभु जी तुम मोती, हम धागा, जैसे सोने मिलत सुहागा।
प्रभु जी तुम स्वामी, हम दासा, ऐसी भगति करै रैदासा।।

- **कठिन शब्दार्थ:**
    - **सुहागा:** एक प्रकार का क्षार/रसायन जो सोने को शुद्ध और चमकदार बनाने के काम आता है।
    - **दासा:** दास या सेवक।
    - **रैदासा:** संत रैदास (स्वयं कवि)।
- **व्याख्या:**

हे प्रभु! आप अत्यंत मूल्यवान और उज्ज्वल 'मोती' के समान हैं और मैं वह साधारण 'धागा' हूँ जिसमें वह मोती पिरोया जाता है। हमारा मिलन वैसा ही पवित्र है जैसे सोने में 'सुहागा' मिलने पर सोने की अशुद्धियाँ दूर हो जाती हैं और उसकी चमक बढ़ जाती है। हे प्रभु! आप मेरे 'स्वामी' (मालिक) हैं और मैं आपका तुच्छ 'दास' (सेवक) हूँ। मैं, रैदास, आपके चरणों में इसी दास्य-भाव की अनन्य भक्ति अर्पित करता हूँ।

4. जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ, तुम सौ तोरि कवन सौं जोरौ।
तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसां।।

- **कठिन शब्दार्थ:**
    - **तोरौ/तोरि:** तोड़ना या संबंध विच्छेद करना।
    - **कवन:** किस (किससे)।
    - **जोरौ:** जोड़ना।
    - **तीरथ:** तीर्थ यात्रा।
    - **बरत:** व्रत या उपवास।
    - **अंदेसा:** संशय, संदेह या चिंता।
    - **चरन कमल:** कमल के समान पूजनीय पैर।
- **व्याख्या:**

संत रैदास अपने आराध्य के प्रति अपनी अटूट निष्ठा व्यक्त करते हुए कहते हैं कि हे राम! यदि आप मुझसे अपना नाता तोड़ (तोरौ) भी लें, तो भी मैं आपसे अपना संबंध कभी नहीं तोड़ूँगा। क्योंकि यदि मैं आपसे नाता तोड़ लूँ, तो इस संसार में ऐसा कोई दूसरा दयालु नहीं है जिससे मैं अपना संबंध जोड़ (जोरौ) सकूँ! मुझे अब बाह्य आडंबरों जैसे तीर्थ यात्रा (तीरथ) करने या व्रत (बरत) रखने की कोई लालसा या संशय (अंदेसा) नहीं है। मुझे केवल और केवल आपके 'चरण-कमल' पर ही पूरा भरोसा और विश्वास है।

5. जहँ जहँ जाओ तुम्हरी पूजा, तुम सा देव ओर नहिं दूजा।
मैं अपनो मन हरि से जोरौ, हरि सो जोरि सबन सो तोरों।
सबही पहर तुम्हारी आसा, मन क्रम वचन कहै रैदासा।।

- **कठिन शब्दार्थ:**
    - **दूजा:** दूसरा।
    - **हरि:** भगवान/विष्णु।
    - **सबन:** सबसे (संसार के लोगों से)।

- **पहर:** प्रहर (समय का भाग, चौबीसों घंटे)।
- **क्रम:** कर्म (कार्य)।

- **व्याख्या:**

मैं इस संसार में जहाँ-कहीं भी जाता हूँ, मुझे हर स्थान पर आपकी ही विराट सत्ता दिखाई देती है और मैं वहीं आपकी मानसिक पूजा कर लेता हूँ। इस पूरे ब्रह्मांड में आपके समान कृपालु और समदर्शी कोई दूसरा देवता (दूजा) नहीं है। मैंने अपने चंचल मन को पूरी तरह 'हरि' (ईश्वर) से जोड़ लिया है और प्रभु से नाता जोड़कर संसार के सभी मिथ्या और स्वार्थी संबंधों को तोड़ दिया है। दिन के सभी पहर (चौबीसों घंटे) मुझे केवल आपकी ही दया की आशा रहती है। मैं (रैदास) मन, कर्म और वचन से पूरी तरह आपके चरणों में समर्पित हूँ।